Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2019 SHISRRJ | Volume 2 | Issue 6 | ISSN : 2581 6306

अर्थशास्त्र में प्रतिपादित पशुपालन सम्बन्धी आर्थिक नीति

विवेक कुमार पाण्डेय
शोध छात्र,
वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय,
जौनपुर

शोध आलेख सार– सरकार के द्वारा उठाए गये सारे कदम सराहनीय है फिर भी मूलभूत समस्याओं की ओर सरकार का ध्यान होना चाहिए। पशुपालन एवं दुग्ध उद्योग के विकास में भी कौटिल्य चिन्तन अत्यधिक लाभकारी सिद्ध होगा।
मुख्य शब्द– अर्थशास्त्र, पशुपालन, आर्थिक नीति, कौटिल्य कालीन समाज।

कृषि–व्यवस्था सदैव से पशुओं पर आधारित रहा। कौटिल्य कालीन समाज में तकनीकी सुविधाएं विद्यमान नहीं थी इसलिए खेतों की जुताई, बुवाई, कटी हुई फसलों के खलिहान तक पहुँचाना फसलों की मड़ाई, गाड़ियों पर अनाजों की लदाई इत्यादि पशुओं के द्वारा संचालित होता था। उर्वरकों की व्यवस्था में भी पशुओं की सहायता ली जाती थी।[1]

साथ ही साथ दुग्धोत्पादन तथा दुग्धनिर्मित दधि धृत वक्र, उदश्चित्, मट्ठा इत्यादि के लिए पशु अपेक्षित थे।[2] सवारी में भी पशुओं का प्रयोग किया जाता था। कपड़ों के निर्माण के लिए भेड़ों की उपयोगिता भी सर्वसिद्ध थी।

कौटिल्य कालीन समाज में चरागाहों की भरपूर उपलब्धता, खाद्यान्नों की बहुलतर और इन समस्त पालतू पशुओं की सुरक्षा के लिए शासन–प्रशासन से होने वाले उत्कृष्ट प्रबन्धनों तथा नियमबद्धता के कारण कृषकों ने पशुपालक को एक सहगामी व्यवसाय के रूप में स्वीकार किया। किसानों ने स्वतः के लाभ के साथ ही साथ अन्य लोगों को भी लाभान्वित करने का काम किया। पशुपालन उस समय इस स्तर पर था कि उस समय दूध और घी की नदियाँ बह रही थी।

यह तथ्य विशेष रूप से ध्यातव्य है कि जिस प्रकार राजा कृषि व्यवस्था में प्रोत्साहन और संरक्षण प्रदान करता था उसी प्रकार पशुपालन व्यवस्था में भी राजा की महती भूमिका हुआ करती थी। निष्कर्षतः बात की जाय तो यह दो व्यवसाय नहीं अपितु वाणिज्य भी राज्य क्षेत्रीय तथा निजी क्षेत्रगत उभयरूप में भारतीय जनमानस में देखने को मिलते हैं।

कौटिल्य कालीन अर्थव्यवस्था की प्रकृति भी निश्चित रूप से मिश्रित थी, दोनों पद्धतियों का अधिकाधिक लाभ भारतीय जनमानस को प्राप्त हुआ और समाज का आर्थिक जीवन अत्यधिक रूप से विकसित हुआ। ये बात अलग है कि कौटिल्य के वर्णनों में से हम सबको सरकार से सम्बन्धित व्यवस्था का विवरण देखने को मिलता है फिर भी कहीं

न कहीं निजी क्षेत्र के उद्योगों से सम्बन्धित ज्ञान भी हो जाता है। पशुपालन से सम्बन्धित उद्योगों का विवरण हमें अर्थशास्त्र में सर्वज्ञ दृष्टिगोचर होता है। सरकार स्तर पर पशुपालन के विकास के लिए गो अध्यक्ष, अश्वाध्यक्ष, हस्त्यध्यक्ष और कोष्ठागाराध्यक्ष के साथ ही साथ अधीनस्थ अधिकारियों तथा कर्मचारियों की नियुक्ति की जाती थी।[3] ये सभी अधिकारी तथा कर्मचारी पशुधन विकास के लिए पूर्णमनोयोग के साथ कार्य सम्पादित करते थे। ये अधिकारी केवल और केवल राजकीय व्यवस्था को नहीं देखते थे अपितु निजी क्षेत्र के पशुपालन–उद्योग में नियमों और कानूनों के प्रावधानान्तर्गत वयवस्थाओं की समीक्षा भी किया करते थे।[4]

सरकारी क्षेत्र के पालतु पशुओं को ठहरने के लिए गोष्ठों की व्यवस्था की जाती थी। व्रजों या गोष्ठों में इन पशुओं के खाने तथा ठहरने की पूर्ण व्यवस्था होती थी।[5] इस व्यवस्था के अन्तर्गत गोष्ठों से प्रत्येक सौ पशुओं पर इन पॉचों कर्मचारियों का एक समुदाय प्रभारी बनाया जाता था। गौ अपने–अपने पशु–सैकड़े के समुचित वयवस्था उत्तरदीयी हुआ करता था।[6] पशुपालन की व्यवस्था में एक विकल्प और विद्यमान था उसकों कर प्रतिकार व्यवस्था के नाम से जाना जाता है।[7] इस व्यवस्था के अनुसार गोपालकों अर्थात् चरवाहों को इन पाल्य पशुओं को ठेकेदार पर एक वर्ष के लिए उठा दिया जाता था। ठेके पर देने पर भी उन पर उनका नियंत्रण बना रहता था। पशुपालन की यह व्यवस्था मानोत्सृष्टक कहलाती थी।[8]

स्वयं गोपालन करने वाले कभी–कभी पशुओं को खतरे से बचाने के लिए व्रजों या गोष्ठों में जमा करा देते थे। पशुओं की व्यवस्था पर खर्च के बाद जो बचता था उसे सरकारी भागानुप्रविष्टक कहा जाता था।[9]

ब्रजों या गोष्ठों में रहने वाली समस्त गायों, भैसों इत्यादि का दोहन क्रिया भी सुचारू रूप से की जाती थी। सभी ब्रजों के दोहक वेतनों पग्राही और अपने कर्म के विशेषज्ञ हुआ करते थे। पशुओं के खाने और चरने की अत्यन्त समुचित व्यवस्था होती थी। यही कारण था कि पशुपालनगण सन्तुष्ट होकर बछड़ों इत्यादि के लिए अधिक से अधिक दूध बिना दुहे ही छोड़ दिया करते थे।

दुधारू पशुओं के दूध और दही के सन्दर्भ में वर्णन पहले ही कर दिया गया है। उस समय देशी घी इतनी प्रभूत मात्रा में विद्यमान था कि समस्त कार्य उसी घी से सम्पादित किये जाते थे। उस समय घी केवल मनुष्य ही प्रयोग नही करता था अपितु घोड़े और हाथियों को भी घी खिलाया जाता था। कहने का आशय है न केवल मानव अपितु पशु भी घी इत्यादि का सेवन करते थे। वास्तव में उस कालाखण्ड में समृद्धि पराकाष्ठा पर थी। यदि कहा जाय कि उस समय भारत देश में दूध और दही की नदी बहती थी तो किसी प्रकार की अतिशयोक्ति नहीं होगी।

वर्तमान समय में भी निश्चप्रचं कौटिल्य की संचेतना का प्रभाव दृष्टिगोचर हो रहा है। वर्तमान सरकार गोवंश तथा पशुओं के संरक्षण के प्रति कृत संकल्प है। गोवंश पर पूर्ण प्रतिबंध है। गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित करने का भी निर्माण चल रहा है। ब्रजों और गोष्ठों का भी निर्माण चल रहा है। इन ब्रजों या गोष्ठों में न केवल पशुओं के ठहरने की व्यवस्था है अपितु उनके खाने की भी व्यवस्था की गयी है। सरकार और लोगों के सहयोग से यह पुनीत कार्य सम्पादित हो रहा है। एवं इसी का परिणाम है कि विश्व के अग्रणी दुग्ध उत्पादक देशों के मध्य सन् 1998 से भारत सबसे अग्रणी देश रहा है, एवं गो प्रजातियों की सबसे अधिक संख्या भारत में ही रही है। भारत में दुग्ध उत्पादन सन्– 1950–51 से 2017 के मध्य 17 मिलियन से बढ़कर 176.4 मिलियन टन हो गया है।

दुग्ध उत्पादन ग्रामीण परिवारों की आय का द्वितीय महत्वपूर्ण श्रोत बन चुका है और महिलाओं के रोजगार के प्रमुख साधन के रूप में अपनी भूमिका निभा रहा है। साथ ही पशुपालन की अच्छी स्थिति का परिणाम यह है कि दुग्ध आपूर्ति न केवल भारत देश में हो रही है अपितु विदेशों में भी दुग्धोत्पाद्यो का निर्यात हो रहा है।

भारत सरकार के द्वारा पशुपालन के साथ ही साथ दुग्ध उत्पादों के समुचित विकास के लिए अनेक प्रयास किए जा रहे हैं। दुग्ध उत्पादों की क्रांति के रूप में श्वेत क्रान्ति जानी जाती है। श्वेत क्रान्ति के जनक कुरियन थे। इनके सत्प्रयासों से इस दिशा में आमूल चूल परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है।

सरकारी प्रयासों में एक बड़ी कमी यह है कि दुग्ध उत्पादों में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करने वाले पशुपालकों को विशेष लाभ नहीं मिल पाता है। कौटिल्य के समय में पशुपालन को राज्याश्रय प्राप्त था और लाभ का अधिक भाग पशुपालकों को प्रदान किया किया जाता था। इस संचेतना से लाभान्वित होते हुए सरकार को इस दिशा में भी प्रयास करना चाहिए।

भारत सरकार पशुपालन तथा दुग्ध उद्योग के विकास हेतु अनेक प्रयास कर रही है जैसे–

1- National Programme for dairy Development (N.P.D.D.)

2- National Dairy Phase - I

3- Dairy entrepreneurship Development Scheme (D.E.D.S.)

4- Support to dairy cooperatives

5- Dairy processins and enfrasturue true development fund (D.I.D.F.)

इस प्रकार सरकार के द्वारा उठाए गये सारे कदम सराहनीय है फिर भी मूलभूत समस्याओं की ओर सरकार का ध्यान होना चाहिए। पशुपालन एवं दुग्ध उद्योग के विकास में भी कौटिल्य चिन्तन अत्यधिक लाभकारी सिद्ध होगा।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. अस्थि वीजानां शकृदालेपः शाखिनां गर्त्तदाहो। अर्थशास्त्र 2–40–24
2. क्षीरद्रोणे गवां घृतप्रस्थः पंचभागधिको
   महिषीणामं–क्षीरा घृतादि वृद्धिर्भवति।
3. अर्थशास्त्र अध्यक्ष प्रचार अर्थशास्त्र 2–45–29 द्वितीय अधिकरण
4. पशूनाम् स्वयं हन्ता–रूपमूल्यं मजेस्। अर्थशास्त्र 2–45–29
5. गोमहिषमजाविकं खरोष्ट्रम श्वाश्वतराश्व व्रजः। अर्थशास्त्र 2–45–29
6. गोपालक पिण्डारक ..... वेतनोपग्राहिकर– अर्थशास्त्र 2–45–29
7. घृतस्याष्टौ वारकानपणिकं पुच्छमङ्कचर्म च वार्षिकं दद्यादिति करप्रति कर
   अर्थशास्त्र 2–45–29
8. व्याधितन्यडानन्य दोही .....भग्नोत्सृष्टकम्। अर्थशास्त्र 2–45–29
9. परचक्राटवी भयादनु ..... भागनुप्रविष्टकम्। अर्थशास्त्र 2–45–29